आखर री आंख सूं

(कविता संग्रै)

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति
अकादमी, बीकानेर
रै
संयोग सूं प्रकाशित

आखर री आंख सूं

सावर दइया

स्वस्ति साहित्य सदन

सावर दइया

प्रकाशक स्वस्ति साहित्य सदन, रानी बाजार, बीकानेर 334001 / मुद्रक एस० एन० प्रिटस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 / सस्करण 1990 / मोल पतीस रुपिया मात्र

AAKHAR RI ANKH SON (Poetry) Sanwar Daiya

Price Rs 35 00

विगत

रचाव

हा ऽ ऽ
जान लेवा है जरूर
आ पीड
आ पीड रचाव री

पण
जान लेवा गडी नैं पछाड
रू-रू मे मुळक भरैं
रचाव

रचाव
पीड मे सुख रो नाम
साखी है
चूघावती मा रो चितराम

थारै खोळै मैं

बीटल्या रै मूण्डो लगावता ई
लखायो म्हनै
स्सो सुख अठै ई है

अमूजो
आधी
अर लू रा थपेडा
का ओळा बिरखा री मार
　　की नी कर सकै म्हारो
थारै खोळै मे म्हनै डर काई ?

म्हे
चूघू धापू
चूघे धापै जगत
थारै बोबा मे
क्षीर सागर है मा !

आखर री आख सूँ

प्रीत
ओलँ-छानै पळी
परखी म्हैं
आखर री आख सू

हूक
होळँ-सी क उठी
सुणी म्हैं
आखर री आख सू

गाठ
मना माय पड़ी
देखी म्हैं
आखर री आख सू

अरदास

आभै री अणत कोरा ताई पूग
टाबरा खातर चुग्गो भेळो कर
सिझ्या पाछो बावड सकू घूरसाळै मे
वा पाख दीजै म्हनै

जुगा सू अधारै मे गम्योडा
सुखा रा मारग सोध सकू
भावी पीढया खातर,
वा आख दीजै म्हनै

नीतर ओ मालक !
म्हैर रै नावै
म्हैर कर र
कोई म्हैर मत करीजै
म्हारै माथै !

क सूं कविता

बाप री जिन्दगी मे पोड—
क सू करजो
मा री आख्या मे सुपना—
क सू कमाई
भाया खातर भविष्य—
क सू कमठाणो
म्हारै वास्तै—
क सू कविता !

कविता

मिनख रा अणगिण निसाण
दरद हरख अर हेत री रागण्यां
उजागर करण री पूरी हूंस

दिन रै उजास में
मादराणां रो भगत धारया पूजीजा
रात रै अंधार में
मिनख रा सून पूतळियां रा
मांडीणा उजारण री हिम्मत हुवै

अंधारै में गम्योड़ा
सुखां रा मारग सोध
जुगां ताईं
सोना सपीट देवण री
हूंस हुवै

तो लै
सांवळ हाल आ कलम
सम्भाल अै पाना
भेळो कर मानख री पीड़
अर लिख कविता।

दो ओळयां पछै

आखै जगळ री कलम बणा
सातू समदरा री ले स्याही
धरती री कागद करघो
म्हैं ई

आ सोच
हरि गुण अणत है
माड-माड थक जासू

पण देखो
दो अळघा माड
सोच-सागर में डूब्यो—
अबै काई लिखू ?
?

आखर अखत आखर पुसव

हा ऽऽ
म्है इण जोगो कोनी
थानै तिरपत करण खातर
चढाय सकू छप्पन भोग

हा ऽऽ
म्है इण जोगो कोनी
थारै सिणगार सारू
भेळा कर सकू माणक-मोती

हा ऽऽ
म्हैं इण जोगी कोनी
थारी पूजा वास्तै
थरप सकू कोई मिंदर

पण
म्हारै मन रा मालक
सास-सास म्हारी
थारै नाव

थारै ई खातर
म्हारा आखर अखत
म्हारा आखर पुसव

होश सम्भाळ्या पछै
जोड्यो औ ई धन
थारै ई चरणा अर्पित

कबूल करो—
अै आखर अखत
अै आखर पुसब

तू आइज

जद
ज्यारूमेर घिर जावै
घनख अधारो
गमण लागै मारग
उजास ओढ र
तू आइजै

जद
सुरजो री आकरी किरणा सू
तपण लागै धरती
वापरण लागै अमूजो
विरखा बीदणी वण र
तू आइजै

जद
बुझण लागै
सासा रो दीवो
खूटण लागै तेल
नुवो जीवण लेय र
तू आइजै

जिन्दगाणी दो रूप

कठैई तो
भाख फाटता ई
सोनलिया किरणा मे
गुलाब रै फूला माथै दमकतो
टोपा-टोपा ठैरघोडो पाणी
आ जिन्दगाणी !

अर कठैई
अभावा री भट्टी मे
नितूकी जरूरता रै तवै माथै
टोपा-टोपा पडतो पाणी
आ जिन्दगाणी !

अर अचाणचक

आभै मे उडत
पछी नै देख
मुळकू
हरखू
उच्छव मनावू

अर अचाणचक
आकळ-वाकळ हो जावू

अटकै म्हारी आख
आड लेय ऊभो
पारधी निजर आवै
म्हारी सास
ऊपर री ऊपर
हेठै री हेठै रह जावै ।

इक्कीसवीं सदी

साव उघाडी
साटणिया साथळा
काकडियै सा फाटता बूकीया
अर अै श्रीफळ
आल्या रातीचोळ
जाणै छक'र पी हुवै हथकढी

जठै जावू
म्हारै गळै पडै
आ उफणती नदी
नाव पूछू तो अेक ई उथळो—
म्हैं इक्कीसवी सदी !
म्हैं इक्कीसवी सदी !!

मन री नदी

आघी
बोळी
गूगी
छता लखणा री लाडी
आ मिजळी सदी

जगल सू जुड्या
लोभ रा लाडू
काटा-वाटा खावा
थे-म्हे-स्सै

कारखानै री सूगली नाळचा
गिंधावतो पाणी
चिमन्या सू निकळतो धूवो
अमूजतो आभो
घासतो खून थूकती हवा

मैला गाभा
मैलो तन
मैली आख
मैली मन री नदी ।

ऊंधो हुयोडो रूख देख'र

म्हारी जडा
जमीन मे कित्ती ऊडी है
आ चीतणियो रूख
      आधी रै थपेडा सू
      ऊंधो हुयग्यो जमीन माथै

कित्ताक दिन रैवैला
तण्यो म्हारो ढील रूख ?

नितूकी वाजै
अठै अभाव-आधी
होळै होळै कुतरै
      जडा नै जीव

अबै
औ गुमान बिरथा
म्हारी जडा
जमीन मे कित्ती ऊडी है !

धोरा रो धणियाप

म्हारै च्यारूमेर
धोरा ई धोरा

धायोडा नै लखावै
सोनै वरणा

भूखा नै
पीळीय मे पडचै टावर-सा
आ धोरा रो धणियाप
म्हारी सासा माथै

आ तो
आरी मरजी
रोसै
का पोखै म्हनै ।

हत्भाग

गूंगो गुड रा गीत गावै
बोळियो सरावै

सजी सभा मे
पागळो पग पम्पोळ बोल्यो—
म्हैं नाचसू !

आंधो आगै आयो
बाडो बोलतो—
थारो काईं ठेको लियोडो है
म्हनै ईं देखण द्यो ।

चळावत !
काठी झाल थारी कलम नै

जायसी री पीड

म्हैं काळो
म्हैं काणो
म्हे कोझो

थानै हसता देखू तो लखावै
हाल मरचो कोनी
शेरशाह

म्हैं माटी हो कदै ई
इण गत सू पैली
जाणता हुवोला थे ई
रचना पडरूप हुवै सिरजणियै रो

म्हारी काणाई
म्हारी कोजाई
उणियारो है वीरो ई।

छळ

लोग कैव
तू जठै दांत देवै
वठै चिणा कोनी देवै
अर जठै चिणा देवै
वठै दांत

पण म्हनै तो तै
दांत अर चिणा दोनूं ई दिया

अबै
आ बात न्यारी है
कै आ दांतां सूं
अै चिणा चावीजै कोनी !

घाणी मे जुत्या पछै

ऊमर रै जादूगरियै
कैसा रै कर न्हाखा
चादी री कळी

पाण आयोडै डील माथै
पडग्या सळ
ढीला हुय'र लटकग्या
डूगरिया उठाव

इण घाणी मे जुत्या पछै
कुण जाणै किसी गळी
नाठग्या उमाव

सोवणा सुपना सजावती आख्या मे
डेरो न्हाख्यो घरविद री चितावा
भात-भात री
राग-रागणिया री जागा
गीता मे बसग्या
आटै-दाळ रा भाव।

जीवण धुखतो छाणो

नित लावणो
नित खावणो
टीगरा रै मूत सू
गिंधावतो बिछावणो
धीजतै जोवन रो
भरमास लेवण मिस
सो जावणो
थाकैलो उतारणो
भळै पछतावणो
आयै वरस
आगणै मे नुवो पावतो
कदैई रोवणो
कदैई गावणो
चाचड देवणियो ई
चुगो देसी
आ सोच मन विलमावणो

म्हारी इण
सातरै तुका आळी
आडी रो अरथ पिछाणो
अैडो जीवण
?

केशव केसन अस करी

जतन करचा घणाई
रैवै इया ई
डूगरिया उठाव
ना छिटकै
ना पडै सळ

कायम रैवै पाण
तण्यो रैवै डील
जाणै धनुप-कमाण
साध्या सू की सध्यो ई

पण
बाळणजोगा केस
चुगली खावै
काच डरावै

कूवलो ठूठ अेक लखाव

पीळीयै मे पडी
मादो मा दाई
      रेत
गळघोडे गोडा आळे
अणकमाऊ याप दाई
            खेत

इणी खेत मे
सास टूटतै री आस दाई
कमाण हुयोडो ठूठ
ठूठ सू निकळयोडी दो डाळा

आख्या आगै पसरै दीठाव
जाणै हाथ पसार र
मागतो हुवै कोई कूवलो--

रूतराज !
की तो म्हैर करो म्हारै माथै ई !

अडवो अेक लखाव

माथो कोनी
माथँ री ठोड है
ऊघो मेल्योडो हाडो

डील
डाग रो टुकडो
हाथा री जागा डडिया

गाभा कोनी खाकी
पण तो ई
काईं मजाल
पानडो ई चर लेवँ कोई
थारँ थका !

शहर ऐक बिम्ब

बडै शहरा रै
सकडै कमरा मे
मिनखा करनै
      वैठा
         सूता
            ऊभा

मिनख
      मिनख
            मिनख

जाणै
दाव-दाव र भारी हुवै
जूनी अर अकारण फाइला
                  बोरा में ।

माटी सूखी माटी डूबी

माटी सूखी
बादल सूखा
साव सूखा सावण रा रस रग-राग
पाणी बिना
मरै मिनख
गोठा करै गिरज काग

बिरखा री बाट जोवती आंख्या
रैयगी फाटी री फाटी ।

माटी डूबी
मिनख डूब्या
डूब्या सूरज-चाद
चौफेर तिर ल्हासा
ल्हासा नै ल्हासा ई देवै खाध

बेथाग बरसी बिरखा बाळणजोगी
बची कोनी
कोई चीज कठै ई किणी जोगी ।

अपणायत अेक लखाव

नितूका
मिलै-मुळकै लोग

अेडै-टाकडै
गनो निभावती
सास
रोजीना आवै-जावै

पण अठै
ना अपणायत
ना हेत

अेडी गत मे जीणो
जाणै
तपतै धोरा माथै
अत बिहूणी जात्रा

वी माथै
माठै मना चालणो
फाटयोडा जूता पैरघा
जिका मे
भरीजती रैवै
रेत।

रेत खातर

आ रेत थारी है
आ रेत म्हारी है
अर
था म्हा सू ई वत्ती
वारी है
रेत रै खेत मे जिका
रेत रा रूख वण र ऊगै
अर
पाछा रळ जावै
इणी रेत मे

सगळा री है रेत
सगळा कर सकै
इण री सोरम सू हेत

रेत माथै
धणियाप री वात विरथा

जे करै ई कोई
तो वो करै
रेत नै जीवै जिको
रेत नै पीवै जिको
तपतै धोरा माथ
पैलडी विरखा पछै
उठतै भभका न झेलै जिको
बळबळती लूवा रै थपेडा सू
खेलै जिको

आपा तो अळघा ऊभा
सोरम लेवा
मौको पड़ै जणा
खाली ओळभा देवा

वरसा रा हेत
वरसा री प्रीत
कायम राखो

रेत री आई रीत
आ सीख
कदै नी देवै रेत
रेत खातर
किणी रो गळो रेत

रेत खातर थारी म्हारी करणी
रेत री औकात नै
ओछो करणी है
आपणो तो खैर है ई ।

पुटियै राजा रै नांव

आभो हेठै आ पड़ैला
औ वैं'म
रूड़ो है
रूपाळो है
साची वात आ
तू खिमता आळो है

इया ई सूतो रैइजे
टागा ऊंची करया
ओ म्हारा पुटिया राजा ।

नीतर
औ आभो
धड़द करतो हेठै आ पड़ैला ।
हेठै आ पड़ैला ।।

सूधी गाय

च्यारूमेर
मूगोछम धरती

मुळकता महकता खेत
ऊमर रै वीसवें पगोथियै ऊभ
पैलडै जापै सू उठ' र
आळस मरोडती
गोरडी कोई

रती उजाड गे ई
ओळभो नी थानै
थे पोमीजो
मोदीजो
मारग मारग आवू
मारग मारग जावू
गाव चावी म्हैं थारी
सूधी गाय

कठै ई विचरू
किणी नै कोई डर कोनी
म्हारै मूण्डै वध्योडी है
छीकी
म्हैं थारी सूधी गाय ।

भाई

कूड-कूड
साव कूड—
भाई भुजा हुव
कूड कूड कूड
साच है फगत
हेत रै आगणै मे
घूड घूड घूड !

हुवै
हा ऽऽ हुवै—
ना कोई आगै
ना कोई लारै
म्है अकेलो ई
सुखी हू
सोरो हू
म्हारो मन हेला मारै

भाई नै मरवाय
जिका भाई
भौजाई रो नखरो भागै
अैडा भाई
(आगोतर री छोडो
इण जमार मे ई)
कोई वाळन नै मागै !

टावर ई कवैला

साटणियै धागा सू ई
फवळा है
रूपाळो है
सोवणो है
कारीगरा रो कूड

आत्मा दाई
अजर है
अमर है
अदीठ है
हाजरिया री हा

छळ छद रो वारोवार
रुकै कोनी
चाल्यो आवै इयाई जुगा सू
लगोलग

मतलव री चासणी मे
कठा ताई डूब्योडी मास्या रे मूण्डै सू
कद सामै आवै साच ?
साच री भीत सू
भचीड खाया बिना खुलै कोनी
शोक मे आधै हुयोडै
राजा री आख

जे कदेई
हसैला तो
टात्र र ई हसैला
जे कोई
साच कयैला तो
टावर ई कयैला
कै राजा साव नागो है !

मायली आख

धूवै अर भाप मे डूब्या
छापो छाणों हा म्है—
याकी रग जद यार खावै
गळी-गुवाड
भागलपुर बण जावै ।

उणी वगत
सळा भरी चामडी
अर धोळा केस बोल्या—
कूड कूड साव कूड
आस्या ही कठै
जिनको फोडी
अर जे फोडी ई हुवै
तो इचरज काई
जद आधा नै आधा करै आधा

ठीक है
आख ई देखै
आख हुवणो चाइजै
पण
आख तो माय चाईजै ।

सामै मडघा पछै

थर-थर ताम्पै हो
हु-हु
लुपण खातर
ना तो ही रजाई
ना लुगाई
सीनो ताण्या साम ऊभो हो
सीयाळो

कम्पकम्पी मे ई खिडकिडी खायी
लुकण री छोड
साथळ ठोक
सामै मडयो
सीयो मरतो धवण लाग्यो
सीयाळो

थे जाणो हो

थे म्हानै
जद कोनी लेवण द्यो

थे जाणो हो
जे म्हैं
आराम सू रैवण लागग्या तो
थारी नींद
हराम हो जावैला ।

सिझ्या अेक चितराम

आभै मे पसरै
　　　　की ललासी
　　　　की पीळास
धोरा बैठ्यो म्है देखू
जडा मे जावतो सूरज

मन चितेरो
माण्डै चितराम

चन्नणिया साडी बाध
आरती री थाळी लिया ऊभी
मुळकती सुहागण रो !

भोर छोरी खातर

अगूण मे सिंदूरी उजास
जाणॅ जवान,हुवती छोरी रै
उणियार आवती ओप

सिंदूरी सूरज
जाणै अवार-अवार घडवायोडो
सोनै रो नुवो टीको
भोर छोरी हुसी स्याणी जद
काम आसी

आ चीत
कुदरत मा !

दिन

अगूण नगारो
सूरज डको

हुवै चोट
दसू दिशावा मे गूजै
आरती रा सुर
दिन हुयग्यो

सूरज दडी

भोर छोरी
रमै दडी
वा दडी
उछळ र
अगूण आगणै पडी
खडी-खडी
देखै छोरी
गुडकै दडी
अर
गुडक्या ई जावै
होळै होळै
आथूण ढाळ कानी

दिन

अगूण नगारो
सूरज डको

हुवै चोट
दसू दिशावा मे गूजै
आरती रा सुर
दिन हुयग्यो

हेलो

भोर छोरी रै
हाथा सू छिटकग्यो
सिंदूर भरयो घडो

बिरछा माथै
चिडकल्या करण लागी
ची-ची ची-ची

चूल्हा जेत्या
पगा मे सुळबुळाट
अेक हेलो—
उठो
काम माथै हालो।

जीत-उच्छव

रात जुल्मा री राजधानी
अधारो गुण्डा

अेकलो सूरज
जूझै
जीतै

मनाव जीत-उच्छव
अगूण किलै ऊभ
उडावै सिंदूरी गुलाल !

बारूमास होळी

सूरज तो
रसियो जबरो
खेले होळी
        बारूमास

भाख फाटता ई
मारै पिचकारी
सिंदूरी किरणा री
        दुनिया रै मूडै

चमक परा जागै
सूत्योडा लोग

मुळकै सूरज
हाथ मे लिया पिचकारी
नूतै—
आवो, खेला होळी।

रसियो सूरज

सूरज स्याणै
माड लिया दो-दो घर

भाख फाटता ई
अगूण गळी मे
भळै आसू
वैय र टुर जावै
दिन भर खटै
अर

आथूण गळी पूग
सिझ्या सुहागण सागै मुळकै
लेवै रातवासो
समदर महल मे

सूरज स्याणै
माड लिया दो-दो घर
जुगा सू निभावै
दोना नै !

ऊमर

ऊगतं सूरज री
सोनलिया किरणा
पत्तं माथं
ठेरघोड़ो
पाणी रो टोपो

आरया आगं उघड़ै
मामा री ऊमर
पत्त माथं ठेरघोड़ो
पाणी रो टोपो
समच !

तपं गूरज
वधं तावड़ो
पूरा रा घपड़ा
हि न पत्तो
अर
पाणी गो टोपो ?
!!

भूखं री बोठ मे सूरज

सिझ्या नै तो
देख्यो ई हो आथूण
लाल लाल

लो
ओ भळ देखो
अगूण ई
होळै-होळै हुवै—
लाल लाल लाल

जरूरता रै हाथा
अभावा री छुरी सू
म्हारै दाईं
ओ सूरज ई लाई
दोनू वगत हुवै
हलाल।

पून्यू-अमावस

पू'यू पुरसै
सागोपाग सिक्योडो फलको

आभो घाप्योडो गोधो
नई भावै तो ई
कोर-कोर
खावै तोड तोड
पूरै पखवाडै

अमावस
आभै रै माथै बाधणजोगी
बा पुरस पूरै पखवाडै
कोर-कोर

औ मिजळो
कँवै राजी हो हो'र—
की और की और
और
हा और।

कठई रैव

सूरज सागै
समदर महल मे
रज्योडो रात
देखती रैयी
भोर रै घरा जावतै
सूरज नै

जोवन गुमेज मे डूबी
नचीती बा
सावळ जाणै

कठैई रैवै ओ
पण
आथण हुवता-हुवता
आसी पाछो अठै ई

और कठै ढोयी इण नै !

पूनम

रात रूपाळी नार
चाद टीको
आभो चूदडी
झिलमिल-झिलमिल कर
तारा मोती
अमर रहीजे
सदा सुहागण तू !

अेक चाद तीन चितराम

गाभा लाल
टीकी लाल
माग मे सिंदूर लाल
रगा मे उछाळा मारै रगत लाल
पम्पोळ वीरा गाल
वो बोल्यो—
भळै नैडो आव
थाथा रै बादला मे
लुकावू थनै
ओ म्हारा चाद ।

चाद लागी है
गोळ-गोल पीळो पीळो

इन्नै दौडयो
बिन्नै दौडयो
लीर-लीर गाभा
तपती सडक
पगा उवराणो
दिन भर घीस्यो गाडो
लुक्खा सूखा टुक्कड चाबतो
आभै कानी कर आगळी
वो बोल्यो—
सिक्योडो फलको तो
बो लटकै वठ ।

चाद सागी है
गोळ गोळ   पीळो-पीळो

दवा री शीशिया खाली
हींडचा करतो जिण मे
तोतो सुर
वो हीडो खाली
अेवकानी पडचा रोवै रमतिया
आ देख
चिंता करै वाप—
औ चाद ई खूटैला
जिया खूटग्यो
पीळीयै मे छोरो !
चाद सागी है
गोळ गोळ   पीळो-पीळो

चांद अेक चितराम

म्हारै छोरै
आपरो ज्यॉमिट्री-बाक्स खोल्यो
परकार काढ्यो
कागद माथै
अेक वृत माड'र
बीमें पीळो रग भर दियो

बोल्यो—
पूनम रो चाद है औ
बतावो किसो क लागै ?

म्हैं बोल्यो—
लारलै दिना
पीळोयै में लागतो
जिसो तै
अेकदम बिसो ई !

थारै ताण

अेक रूत हुवै
सोरम भरै मन मे

मन मे तू हुवै
तो पछै तू ई है वाई
आ रूत

मुळकै फूल
पाकै फळ
बाजे पत्ता
आळस मरोडै वेला
लखावै
चौफेर अेक सगीत
तू हुवै जणा मन मे

थारै विना
ईं होणै रो अरथ काई
तू ई बता

लै जाण
है थारै ताण
रूत रा रग रूडा ।

मन री आट-गलरी मे

थारै चेहरै माथै देखण खातर
अगूण मे पसरतो उजास

आडी टेढ़ी वाता कैबू म्हैं
कणाई-कणाई
आ तो म्हारी आदत है

अेकर फीसै तू
मनाया मुळकै
आसू पूछती लुकै सीनै मे
हाया रै वी सागी लटकै सागै
—आछी आदत है।

इणी लटकै लारै गैलो म्हैं
अजै टाग राख्यो है
मन री आट गैलेरो मे
थारो ओ चितराम !

अेक चितराम औ ई

काईं ठा काईं जची म्हारै
डायरी खोल राख्या सामैं
अतस रा अै आखर अमोला

सोच्यो—
राजी हुवैली तू
कालज री कोर ई तो ही
काळजै मे चौफेर

सुण परी
मुळकी तो सरी
पण उठती दोली
हाथा रै सागी लटकै सागै—
कै काम तो आथ कोनी
बैठा बैठा बाई गट्टी वाता
चुगबो करो।

चाल रे जीवडा।
वद कर डायरी
वा चितरामा मेळौ
अक चितराम औ ई सही।

इया ई आछी

आडो खडकाया विना ई
अेक दिन अचाणनक
म्है पूग्यो घरा

टावर पढै हा
वै बोल्या—बतळाया

कुण है कुण है
करती तू आयी रसोई सू

आटै सू भरचोडा हाथ थारा
लिलाड रो पसेवो पूछती
केसा नै लारै करती

देख म्हनै
तू सोधण लागी ओढणियो

पण सुण
ऊभी रह घडी भर
ऊभी रह
इया ई आछी लागै तू ।

सांस लेवती रुत

त वन हुव जणा
मृगाछम हुव बिरछ
डाळा माथे बैठा पछीडा ई
गावै—वतळावै

बागा मे
फूल हुवै
फूला मे सोरम हुवै

तू सागै हुवै जणा
फागण—चैत री गुलाबी ठण्ड हुवै
ठण्ड सू उपजती
हळवी-हळवी आच हुवै

सुण तो सरी—
जीवती-जागती
महकती-मुळकती
सास लेवती रुत है तू

बानकारो

ओ हाथा नै वा है
कठै काई किन गेड़-गोड़ है
डोम-विरछ

ऐ आशा आरे
डाळी दूनी डिंगरपोडी ठंड में
कठै लाधै निवास

औ थी जादै
मन री अंधारी अनूवती घाटी में
थारी ओळू री दीवो
नित करै उजास !

अेक ई ओळी

फूल मार्गं वतळावतै भवरै न देख
सोच्यो म्हैं अरथ अेक

डाळ माथै
गटर गू-गटर गू सुणी
पुरता हुयो अरथ सागी

अवै म्हारै सामैं
चाद है बादळ है
चूड्या री खणक है
काजळ है
टीकी है

आ रूत
रूडी रूपाळी नीकी है

सुगना सू ई बकार देखो भलाई
उथळो सागी—
अवार नईं
अठै नईं
इया नईं
बिया नईं

जाणै रिकाड माथै
अटक्योडी हुवै सुई
अर वाजै अेक ई ओळी—
अवार नईं अठै नईं इया नईं नईं नईं

मूठ अचूक

म्है तो आ ई सुणी
बावडचा करै जोवन
दो पछै

पण
थारै कनै तो
अेक ई राग—
म्हारी कड दूखै
फावया मे लेवण खातर
म्हैं गूथू जाळ
पण तू कद पजै

नट विद्या री जाणकार
नाड हिला र
मारै मूठ अचूक--
धोळा आयग्या
वावळी वाता करो !

केशव !
विन बावा सुण्या ई
म्हैं मारा मन !

सम्भाळ र राख सूं

सिकती रोटी उथळता
होळै सी क चाख लेवै तवो
म्हारी आगळी

आगळी माथै फालो
फालै मे पाणी
पाणी मे ऊचो आवै—
अेक कवळ

अरे !
औ तो थारै उणियारै है
अबै म्है
केई दिना ताँई
सम्भाळ र राख सू
औ फालो
औ कवळ
औ उणियारो
इणी उणियारै ताण
म्हारै चोफेर
ओळू-उजास !
अटूट विश्वास !!

बढी आगळी चूसता

ठा पडै अर पडै ई कोनी
म्है कैवू जणा
अड जाव तू ई
        ठा पडै किया कोनी
        पड ई है

पडै ई है
देखलै तू खद

आटो ओसण मेल्यो है
स्टोव जगावण सू पैली
साग सुधारता सुधारता
            चक्कू सू वढै आगळी

आगळी आवै मूण्डै मे
        म्है चूसू
        अर
        चूस्या ई जावू
आरुया आगै आय ऊभै तू
ऊभी-ऊभी मुळक
जाणै पूछती हुवै—
            क्यू
    अबै ठा पडो नी ?

म्हैं आयो जणा

अेक दिन भवरो आयो
फूला वतळ करी कोनी

पेड री डाळ माथै
चिडो अेक्लो ई करतो रैयो ची ची
चिडी सूर मे सुर मिलायो कोनी

हेलो पाडचो आभै
पण धरती बोली कोनी
बोली कोनी धरती जणा पछै
तू किया बोलती

उन्हाळै सू अमूज्योडी धरती माथै
वरस्या बादळ
पसवाडा माथ पसवाडा फोरण लागी
धरती

बी घडी
म्हैं आयो जणा
मुळकती लाधी म्हानै तू ई ।

घडी हरख भरी

अचाणचक आव हिचकी
वध जावै अेक अदीठ पुळ
ई खुणै सू बी खुणै
देखू म्है—
बिन्नै सू भाजी आव तू
इन्नै सू म्है

बीच पुळ
बाथा भेटा हुवा आपा
मासा सागै गुथ जावै
सासा रा तार

थिर हुयोडो बगत
थिर ई रैवै
आ घडी हरख भरी

औ ई उच्छव
औ ई लाखीणो तिवार
आपा मनावा वारम्बार !

आ सास जिया

मन काचो क्यू करै बावळी
अळघा हुया ई ठा पडै
आपा कित्ता सागै हा

तू किसी जाणै कोनी
सागै रवै लोग
तो ई कित्ता अळघा हुवै
अेक दूजै री सास सू

गळगळी हुयोडी है तो काई
अेकर मुळक परी
आ मुळक थारी उजास म्हारै मारग रो

मोडै ऊभ विदा करतै
डावर नैणा री कोरा ठैरयोडै
पाणी री सौगन
म्है कठैई रैवू
तू हरदम सागै हुवै म्हारै
सामै आ सास जिया ।

इण रम्मत मे

म्हैं जीतू अर तू हारै
का पछै
तू जीत
      अर म्है हारू
तो इण सू काई फरक पडै ?

सुण म्हारी मरवण !
आपणै बिच्चै
हार जीत रा दावा ई बिरथा

तू जीतणी चावै
तो जीत भलाई नित
म्हनै तो हर कबूल रोजीना

म्है जाणू
इण रम्मत मे
हार ई जीत है !

आवै तो आव

ठालीवूली ठिठकारचोडी ठण्ड
रू-रू मे जमगी

आ बरफ
किया पिघळै

अबै तो
थारै बोबा गढ मे ई
लाध तो लाधै
की गरमास

जम्योडी सासा मे
की गति आवै
बाथा भेटा हुया ई

आव
तू आव
अबै तो आव
म्हारी सासा री सागोतर।

खद रो कागद खुद बाचता

गुलाबी कागद माथै
रातै रग लिखी अै ओळचा
मन राखै रातो रात रात भर

डाक मे घाल
फेरू बाचण रो सुख
क्यू गमावू

म्हारै कनै
म्हारो धन
फिर-घिर बाचू म्है
म्हारी ओळचा
अरथावू अर लाजा मरू
हाय राम !
म्है इत्ती लाजबायरी
इत्ती नागी-उघाडी

हाल ताई याद है

ठीक है
भूलणिया भूल्या हुवैला
राग
रग
छकड़ी
तीन चीज याद रैयी हुवैला
तेल
लूण
लकड़ी

पण
म्हनै तो
हालताई याद है
थारै अगा सू फूटती
फूला री सोरम

अर
थारै डील रो
निवायो परस

वा जकड़ी
सासा सागै गुत्थम गुत्था हुयोड़ी
बै सासा !

आख कव तो ई

वै शब्द कठै
जिका कर सकै
        वखाण
सौ टका साचो वखाण

म्हारी आख्या आगै
पसरचोडो है
कुदरत रो मदछकियो जोबन
            अणहद रूप
इणी मद छकियै जोवन
अर अणहद रूप रो
        अेक टुकडो
            तू

सावळ देख्यो परख्यो
केई केई दफै
        चढचो
        उतरचो
डील रा डूगर
डील री ढळाद
गुजरचो गरम गुफावा सू
तावडै मे वैठचो
थारै केसा री ठण्डी छीया
सीयाळै मे सोध्यो
        वोबा गढ मे निवास

पण आज
लाख जतन ?रया ई
सामै कोनी आवै
सागी वात

आ होठा नै वाई ठा
देवण आळी तो आख ही

तू वाई है
वडी है
अवै आ आख कैवै तो ई
ठा पडै ।